बर्लिन (जर्मनी)
मई २३, १६६६

सन्देश संख्या ५

यथार्थ एवम् अयथार्थ

हम यथार्थ का सामना नहीं करते। हम सदैव अयथार्थ की काल्पनिक अवस्था का सृजन कर यथार्थ से पलायन करने की प्रवृत्ति रखते हैं।

हमारे मन के विरोधाभासों एवं प्रदूषण का यही मूल कारण है।

उदाहरणार्थ – यदि हमें भय लगता है तो हम भय के यथार्थ का सामना नहीं करना चाहते। हम तत्काल बाइबिल, गीता या कुरान के अनुकूल अभय की काल्पनिक अवस्था का सृजन कर लेते हैं और तब हिन्दू, ईसाई या मुस्लिम के अपने अनुबंधन के अनुसार इस काल्पनिक अवस्था में अंतर्ग्रस्त हो जाते हैं। इस काल्पनिकता में लिप्त हो जाना मन की ही एक चाल और खेल है।

यह मन की मौलिक आत्मसंरक्षी–यंत्ररचना है।

काल्पनिकता के साथ अंतर्ग्रस्तता एवम् इस प्रकार यथार्थ से पलायन द्वारा विभेदकारी चित्तवृत्ति (मन) संपोषित होती है। यही कारण है कि हम कभी भी मुक्त नहीं हो पाते बल्कि बंधन में और अधिक ङ्गँसते जाते हैं क्योंकि मन ही बंधन है।

किन्तु यदि हम सीधे भय का अवधान कर सकें और इस यथार्थ का सामना कर सकें तो प्राकृतिक विधान से एक चमत्कार घटित होता है। तब हम पाते हैं कि भय गायब हो गया है और एक अदम्य साहस हमें स्पर्श करने लगता है परन्तु इस साहस को कभी भी कोई मन्दिर, मस्जिद या चर्च छूने नहीं देते हैं क्योंकि पुरोहित वर्ग के लिए यह सुविधाजनक नहीं है। वे हमें भय में ही रखना चाहते हैं। इससे उनका व्यापार चलता है। किन्तु भय से पंगु मन धार्मिक मन नहीं है। भय के विरोधी के रूप में उत्पन्न साहस और भी विकृत भय है। यह विरोध ही आतंकवाद का उत्पत्ति स्थल है।

भय से मुक्ति, मन से मुक्ति एवं ''निर्मनावस्था'' का आविर्भाव है। यही वास्तविक चमत्कार है– न कि धार्मिक पुस्तकों द्वारा प्रचारित चमत्कार (पवित्र झूठ)।

ज्ञात के अस्तित्व के बावजूद ज्ञात से मुक्ति ही चमत्कार है।